International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रांगेय राघव के लोक जीवन का दर्शन

शोधकर्ता-अंकिता वशिष्ठ
महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर
शोध निर्देशक-डॉ. इन्दु प्रकाश (सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर हिन्दी)
राज. कन्या महाविद्यालय धौलपुर
महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर

सारांश

बहुत कम उम्र में इस दुनिया में प्रवेश करने के बाद, रांगेय राघव ने बहुत कम उम्र में उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक, नाटककार, कवि, इतिहासकार और रिपोर्ताज लेखक के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने अपनी रचनात्मक क्षमताओं से हिंदी की महान रचनात्मकता का भी परिचय दिया। रांगेय राघव का जन्म 17 जनवरी, 1923 को हुआ था और उनका निधन 12 सितंबर, 1962 को हुआ था। उन्हें हिंदी के सबसे अनोखे और बहुमुखी लेखकों में से एक माना जाता है। इस तथ्य के बावजूद कि रांगेय राघव मूल रूप से हिंदी भाषी नहीं थे, वे हिंदी साहित्य के विभिन्न स्तरों पर आधुनिक सत्य पर आधारित महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम थे। उन्होंने कई उपन्यास लिखे जो जीवनी पर आधारित थे और ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ पर केंद्रित थे। उपन्यास कहानी कहने के प्रयोगों के माध्यम से, उन्होंने कहानी के पारंपरिक ढांचे को बदल दिया और इसे एक ऐसा उपन्यास रूप प्रदान किया जिसमें कई आयाम शामिल थे। महाकाव्य कहानी लेखन, जीवनी पुस्तक लेखन और रिपोर्टिंग लेखन की परंपराएँ सभी उनके द्वारा स्थापित की गईं। प्रेमचंद के निधन के बाद, लेखकों को एक विलक्षण कहानीकार के रूप में उनकी रचनात्मक सम्पदा के रूप में एक महत्वपूर्ण बाधा का सामना करना पड़ा।

मूल शब्द: रांगेय राघव, जीवन का दर्शन ।

परिचय

यद्यपि डॉ. रांगेय राघव ने बहुत कम उम्र में ही इस दुनिया में प्रवेश कर लिया था, फिर भी उन्होंने बहुत कम उम्र में ही उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक, नाटककार, कवि, इतिहासकार और रिपोर्ताज लेखक के रूप में अपनी पहचान बनाई। साथ ही उन्होंने अपनी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सृजनात्मक क्षमता से हिंदी की महान सृजनात्मकता को भी प्रदर्शित किया। वे हिंदी साहित्य के उन लेखकों में से हैं जो अद्‌वितीय और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। साहित्य के क्षेत्र में डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व विशेष महत्व रखता है। वे कर्मक्षेत्र में प्रखर प्रतिभा और अथक परिश्रम के प्रतीक हैं। मानव जीवन में उनकी आस्था अद्‌वितीय है। वे अपने जीवन के आरंभ से ही प्रयोगशील व्यक्ति रहे हैं। जीवन भर सत्य की खोज ही उनका प्राथमिक उद्‌देश्य रहा। राजनीति, धर्म और सामान्य जीवन सहित विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने अनेक प्रयोग किए। उन्होंने जो रचनाएँ की हैं, वे उनके प्रचंड प्रयास, उनके दृढ़ संकल्प और उनके कार्य के प्रति व्यवस्थित दृष्टिकोण का परिणाम हैं। डॉ. रांगेय राघव को समग्रता से समझने के लिए उनके जीवन-चरित्र और जीवन-दर्शन की आधारभूत समझ होना आवश्यक है, जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है:

यद्‌यपि उनका जन्म का नाम तिरुमल्लई नम्बकम वीर राघव आचार्य था, फिर भी उन्होंने अपनी साहित्यिक पहचान के लिए रंगाय राघव नाम का प्रयोग करना चुना। श्री रंगाचार्य ने ही 17 जनवरी, 1923 को अपने घर में उन्हें जन्म दिया था। श्रीमती कनकवल्ली उनकी माता थीं और श्रीमती सुलोचना उनकी पत्नी थीं। उनके पूर्वजों की जड़ें तिरुपति में थीं, जो आंध्र प्रदेश में स्थित है। 'वैर' गाँव के सीधे-सादे और ग्रामीण परिवेश के भीतर उनकी कल्पनाशील लेखनी ने आकार लेना शुरू कर दिया था। यह वह समय था जब उनकी रचनात्मक क्षमता यह प्रकाशित करने का तरीका खोज रही थी कि राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा है। इन परिस्थितियों में उनका मानना था कि देश के लोगों में अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा और स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा को पुनः जागृत करने का एकमात्र तरीका हिंदी के माध्यम से है, जो उनकी मातृभाषा है। इस तथ्य के बावजूद कि चित्रकला ही वह जगह थी जहाँ से उनके कलात्मक मार्ग का विकास शुरू हुआ। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति का अंत एक कविता के साथ हुआ, जिसे उन्होंने अपने निधन से पहले लिखा था। उन्होंने कविता की दुनिया में अपनी यात्रा लगभग उसी समय शुरू की, जब उन्होंने किताबों की दुनिया में अपनी यात्रा शुरू की थी, जो 1936 या 1937 के आसपास थी। इस तथ्य के बावजूद कि उन्होंने अपनी रचनात्मक शुरुआत कविता से की थी, वे गद्‌य लेखन के लिए प्रसिद्‌ध हुईं। 1946 में प्रकाशित उपन्यास "घरौंदा" ने उन्हें एक प्रगतिशील कहानीकार के रूप में प्रमुखता दिलाने में उत्प्रेरक का काम किया। बताया जाता है कि वर्ष 1962 में वे कैंसर से पीड़ित थीं। उसी वर्ष 12 सितंबर को उनका निधन मुंबई में हुआ, जिसे कभी बॉम्बे के नाम से जाना जाता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

था।

उद्देश्य

1. रांगेय राघव के जीवन परिचय का अध्ययन ।

2. रांगेय राघव का कृतित्व का अध्ययन ।

पारिवारिक जीवन

रांगेय राघव का परिवार एक ऐसा चौराहा था जहाँ एक पारंपरिक संयुक्त परिवार और एक समकालीन परिवार एक साथ आए। यह परिवार, जो स्कूली शिक्षा के मामले में समकालीन था, अपने पहनावे और जीवन जीने के तरीके के मामले में प्राचीन भारतीय संस्कृति का पालन करता था। राघव जी के पिता ने उन्हें संस्कार की शैली में कविता लिखने की प्रेरणा दी और वे समय-समय पर उन्हें प्रोत्साहित भी करते रहे। उनके परिवार का एक विशेष शौक पढ़ना और लिखना था। भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में, श्री रंगाचार्य एक प्रतिष्ठित विद्वान थे। उनके पिता में ये विशेषताएँ थीं और राघव जी उनसे सीधे प्रभावित थे। यही कारण है कि उनमें भारतीय संस्कृति को समझने की अद्भुत क्षमता थी, हालाँकि साथ ही वे समय के प्रभाव को आत्मसात करने से भी नहीं चूकते थे। यही कारण था कि उनका व्यक्तित्व आधुनिक और प्राचीन के विलक्षण मिश्रण के रूप में विकसित हुआ। डॉ. रांगेय राघव की माँ श्रीमती कनकवल्ली एक ऐसी महिला थीं जो संस्कृति के प्रति बहुत चिंतित थीं और उनका दिल बड़ा था। साहित्य हमेशा उनके दिल में एक विशेष स्थान रखता था। वह ब्रज भाषा में पारंगत थी और घर पर भी इसी भाषा का प्रयोग करती थी। उसे भाषा की गहरी समझ थी। बाद के वर्षों में उसने अंग्रेजी भाषा और संस्कृत का भी अध्ययन किया। ईश्वर में उसकी गहरी आस्था थी और वह अपना अधिकांश समय उसकी पूजा में लगाता था। रागेय राघव उसके व्यक्तित्व से कुछ हद तक प्रभावित था। माँ कनकम्मा की सरलता, करुणा और दयालुता के कारण उसमें मानवतावादी दृष्टिकोण पैदा हुआ। चूँकि लेखकों का पैसा कमाने में असफल होना आम बात है, इसलिए उसकी माँ नहीं चाहती थी कि वह लेखन में अपना करियर बनाए। उस समय को देखकर, वह जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए धन के महत्व से अवगत थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डॉ. रागेय राघव की माँ लगातार बीमार रहती थी। उनकी माँ उनकी देखभाल करने में असमर्थ थीं, इसलिए उनकी मौसी ने ही उनका पालन-पोषण किया। यह रांगेय है।

रागेय के व्यक्तित्व ने भी राघव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रागेय राघव अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे थे, जिसका मतलब था कि उन्हें अपने भाई-बहनों से भी बहुत स्नेह मिला।

उनके मझले भाई श्री टी.एन.के. आचार्य ने लिखा, "जब वह छोटा बच्चा था, तो वह गोरा-चिट्टा, काली-आंखों वाला, रेशमी बालों वाला, सुंदर बच्चा था, तीन भाइयों में सबसे छोटा होने के नाते, वह मेरा भाई था, मिलनसार और स्नेही, सभी का प्रिय," ये शब्द श्री टी.एन.के. आचार्य ने लिखे थे। हमारे लिए उसका प्यार अथाह था, और वह हमारे सुख-दुख दोनों में साथी था।

वैवाहिक जीवन

डॉ. रागेय राघव का उद्देश्य अविवाहित रहते हुए हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन में अपना जीवन समर्पित करना था। उनका मानना था कि वैवाहिक जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करने के कारण उनके लिए अपनी साहित्यिक रुचियों को आगे बढ़ाना कठिन हो जाएगा। परिवार और समाज के दबाव के बावजूद उन्होंने तैंतीस वर्ष तक विवाह नहीं किया। अत्यधिक प्रेम और लगातार साहित्यिक रचनाएँ लिखने के कारण उनमें रोग के लक्षण दिखाई देने लगे। "जब मैं उस खराब स्वास्थ्य की स्थिति में था, तो मुझे पहली बार अकेलेपन का एहसास हुआ और उसके तुरंत बाद मेरे मन में एक जीवनसाथी की इच्छा जागी।" डॉ. रागेय राघव की प्रबल इच्छा थी कि उनकी पत्नी उनकी ही जाति की हो और हिन्दी बोलने वाली हो। श्रीमती सुलोचना को प्राप्त करने से उनकी महत्वाकांक्षा पूरी हुई।

1955 के दिसंबर माह में राघव जी की माता बीमार हो गईं। इस मामले में सुलोचना अपनी मां के साथ वैरा गईं ताकि उनकी स्वास्थ्य स्थिति का पता लगा सकें। डॉ. राघव वैरा में जो रचनात्मक कार्य कर रहे थे, उसमें वे उन दिनों काफी व्यस्त रहते थे। उनके स्वभाव और प्रतिभा से प्रभावित होकर राघव जी ने उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। सुलोचना जी ने प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति दे दी। 7 मई, 1956 को बंबई के माटुंगा कस्बे में सादगीपूर्ण और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पारंपरिक तरीके से उनका विवाह हुआ।

शिक्षा दीक्षा

हालाँकि रांगेय राघव का जन्म आगरा में हुआ था, लेकिन छह साल की उम्र तक उन्होंने घर पर ही स्कूल में पढ़ाई की। इसके बाद, उन्होंने अपनी शिक्षा के लिए आगरा के सेंट विक्टोरिया स्कूल में दाखिला लिया। चूँकि श्री रंगाचार्य एक ऐसे व्यक्ति थे जो बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम थे, इसलिए उन्होंने अपनी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त की, इस तथ्य के बावजूद कि उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ तमिल, संस्कृत और फ़ारसी की परंपराएँ थीं। इस वजह से, वह चाहते थे कि उनके बच्चे अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त करें। जब वह छह साल के थे, तब उन्होंने पहली बार स्कूल जाना शुरू किया।

चूँकि वह स्कूल के काम से बहुत डरते थे, इसलिए वह हमेशा स्कूल आने से बचने के लिए कोई न कोई बहाना ढूँढ़ लेते थे। उनके बड़े भाई श्री टी.एन.के. आचार्य ने जो कहा है, उसके अनुसार, "उन्हें छह साल की उम्र में स्कूल भेजा गया था।" हर दिन, वह रोने का बहाना ढूँढ़ते थे, और हम हर बार उन पर हँसना शुरू कर देते थे। यह सभी के लिए पूरी तरह से आश्चर्य की बात थी कि स्कूल के काम के डर से रोने वाला छोटा लड़का एक दिन अपना पूरा जीवन पढ़ने में लगा देगा।

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उन्हें साहित्य से विशेष लगाव था। यही कारण है कि उन्होंने ऐसे विषय पर शोध करने का निर्णय लिया। 'गोरखनाथ और उनका युग' उनके शोध प्रबंध का विषय था, जिसे वर्ष 1948 में पीएचडी के लिए स्वीकार कर लिया गया। हरिहरन नाथ टंडन के अनुसार, वे यह कार्य उनकी देखरेख में ही कर पाए थे। उनके निधन के एक वर्ष बाद दिल्ली में आत्माराम एंड संस द्वारा इस पुस्तक का विमोचन किया गया।

वैरा के छोटे से गांव की मिट्टी की खुशबू लेखक रांगेय राघव के रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास का प्रस्थान बिंदु थी। वैरा, आगरा, शांतिनिकेतन और जयपुर वे स्थान थे, जहां उन्होंने अपना अधिकांश समय लेखन में बिताया। राजस्थान की सीमा पर स्थित वैरा के छोटे से गांव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की प्राकृतिक सुंदरता, सुखद वातावरण, सहजता और सादगी हमेशा से उनके लिए आकर्षण का स्रोत रही है।

वे आम लोगों के बीच उसी माहौल में अपने व्यक्तित्व को आकार देते रहे, क्योंकि उनसे उनका गहरा रिश्ता था। डॉ. कमलेश ने यह नोट लिखा है। प्रगतिशील लेखक संघ की सदस्यता से उनकी स्वाभाविक प्रतिभा में निखार आया था, फिर भी वे संघ से जुड़ी औपचारिकताओं से असंतुष्ट थे। वे जीवन और दुनिया को अपने आप अनुभव करने के आदी हो चुके थे।

जो लेखक अपने जीवन को अपने साहित्य के अनुरूप नहीं जीता, उसके साहित्य में कोई दम नहीं होता। "कब तक प्रकार", "पथ का पाप", "राई" और "वार्ता" जैसी फिल्मों में गांव के जीवन और उसके वास्तविक स्वरूप को सरल और सहज तरीके से दिखाया गया है।

डॉ. रांगेय राघव एक ऐसे हास्यकार थे, जिनका अंदाज वाकई प्यारा था। व्यंग्य की सीमाओं की बात करें तो वे किसी भी तरह की बंदिशों को स्वीकार करने से इनकार कर देते थे। उनका हास्यबोध न केवल विनम्र और गर्मजोशी भरा था, बल्कि तीखा और तीखा भी था। "डॉ. रांगेय राघव ने परिस्थिति की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करने में संकोच नहीं किया। उनके व्यक्तित्व के इस पहलू का प्रभाव पुस्तक के पात्रों पर भी पड़ा। उनके अधिकांश लेखन के यथार्थवादी होने का एक मुख्य कारण यही है।

इस तथ्य के बावजूद कि डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व विद्रोही था, वे तर्क-वितर्क पर अधिक जोर देने के लिए जाने जाते थे। बचपन से ही वे पूजा-पाठ में विश्वास नहीं करते थे, इस तथ्य के बावजूद कि उनका जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ था। वे धर्म से जुड़े अंधविश्वासों और विचारों में बहुत अधिक विश्वास नहीं रखते थे। चूँकि वे मार्क्सवाद से प्रभावित थे, लेकिन धर्म के प्रति उनका रवैया नकारात्मक नहीं था।

अपने कार्यों के माध्यम से, रांगेय राघव ने साहित्य की एक महत्वपूर्ण मात्रा का निर्माण किया, जिसमें साहित्य के कलात्मक और व्यावहारिक दोनों कार्य शामिल थे। इसके अलावा, उन्होंने ऐसा साहित्य दिया जो मददगार था, जो उनके अध्ययन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान पर आधारित था। अपने ज्ञान को एक रचना में ढालने की प्रक्रिया के माध्यम से, उन्होंने इसे वितरित किया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रांगेय राघव का कृतित्व

डॉ. रांगेय राघव ने जितने कम समय तक जीवन जिया, उससे कहीं अधिक मात्रा में उन्होंने लेखन कार्य किया। उन्होंने साहित्य के अंतर्गत आने वाले सभी उपक्षेत्रों पर लिखा और उन्होंने "रिपोर्टेज" नामक एक नया उपक्षेत्र भी स्थापित किया। जब वे सुबह उपन्यास लिखने बैठते तो दोपहर तक उसे पूरा कर लेते। उनकी साहित्यिक खोज में इतनी अधिक उत्तेजना और गति शामिल थी कि उन्हें लिखने से रोकना असंभव था। "कब तक पुकारू" उपन्यास उन्होंने एक महीने में लिखा था, जबकि "राय और पर्वत" लघु उपन्यास उन्होंने तीन दिनों में लिखा था। जब भी उन्हें कहानियाँ और किताबें पढ़ने में रुचि नहीं होती थी, तो वे कविताएँ लिखते थे।

वर्ष 1936 के आसपास, डॉ. रांगेय राघव ने साहित्य की दुनिया में प्रवेश किया, जब वे मात्र 14 वर्ष के थे। "गीत" उनकी एक रचना का शीर्षक था, जो उनके छात्र जीवन के दौरान साप्ताहिक विश्वामित्र में प्रकाशित हुई थी। इस दौरान वे "बोलते खंडहर" और "अंधेरे की भूख" जैसी रचनाएँ भी लिख रहे थे, जो दूसरे देशों की कहानियों पर आधारित थीं और 1955 में प्रकाशित हुईं। 1943 और 1944 के बीच लेखक ने पूरी उत्कृष्टता हासिल की और साहित्य जगत में अग्रणी स्थान पर पहुँच गए। अपनी पहली कहानी "देवोत्थान" को सेंट कॉलेज आगरा की पत्रिका में प्रकाशित करवाने के बाद उन्होंने अपनी दूसरी कहानी "अभिमान" को जर्मन पत्रिका हंस में 1944 में प्रकाशित करवाया। 19 और 20 वर्ष की आयु के बीच ही रांगेय राघव की कहानियाँ प्रकाशित होनी शुरू हुईं, जबकि ऊपर बताई गई कहानियों के प्रकाशित होने से पहले भी वे नियमित रूप से लिखते रहे थे। इसी दौरान वे प्रगतिशील आंदोलन के सदस्य बन गए।

राजनीतिक परिदृश्य

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, कई अलग-अलग स्वतंत्र भारतीय राष्ट्र अस्तित्व में आए। लाभ प्राप्त करने के लिए, अंग्रेजों ने भारत की कमियों का लाभ उठाने के लिए कूटनीति का इस्तेमाल किया। व्यापार करने के लिए, ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। बंगाल में हुए प्लासी के युद्ध के परिणामस्वरूप, अंग्रेज अपने राजनीतिक अधिकार स्थापित करने और अंततः भारत को अपना उपनिवेश बनाने में सक्षम हुए। ब्रिटिश सरकार का प्राथमिक ध्यान अपने हितों पर होने के परिणामस्वरूप, उन्होंने शुरू से ही जो प्रशासन स्थापित किया, वह भारतीयों पर उच्च पद से थोपा गया था। ब्रिटिश शासक,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जो यह मानते थे कि वे अन्य जातियों से श्रेष्ठ हैं, भारतीयों या उनके सामने आने वाली चुनौतियों में कोई विशेष रुचि नहीं लेते थे।

अंग्रेजों ने अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए भारतीय उच्च वर्ग, जिसमें सामंती जमींदार शामिल थे, के साथ अपने संबंध बनाए रखे। मूल अमेरिकियों के प्रति उनके शोषणकारी व्यवहार के बदले में, उन्हें सीमित अधिकार दिए गए। भूमि बंदोबस्त के दौरान, कॉर्नवालिस ने जमींदारों को अपने किरायेदारों से किराया वसूलने का अधिकार दिया। 1793 वह वर्ष था जब इस व्यवस्था को स्थायी बनाया गया। जब बात जमींदारों की आई, तो लगान की दर पहले से तय थी। जब तक वे निगम से किराया वसूलते रहेंगे और फर्म को देते रहेंगे, तब तक उनसे संबंधित अधिकार नहीं छीने जा सकते। इस अधिकतम सीमा तक उन्हें भूमि का स्वामी माना जाता था और उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले में उन्हें किराए का ग्यारह प्रतिशत अपने पास रखने का विशेषाधिकार दिया जाता था। 15 राजनीति के संदर्भ में, जमींदार वर्ग यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण था कि कंपनी के हितों की रक्षा की जाए। यह सामाजिक समूह अंततः अंग्रेजों का जयजयकार करने वाला बन गया। जमींदार ही वे लोग थे जिन्होंने इस व्यवस्था से सबसे अधिक लाभ उठाया क्योंकि इसने भूमि पर उनके वैध स्वामित्व या नियंत्रण को स्वीकार किया। लॉर्ड विलियम बेंटिक ने स्थायी बंदोबस्त के बारे में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में लिखा है: "अगर बड़े पैमाने पर जन विद्रोह या क्रांति का मुकाबला करने के लिए सुरक्षा की आवश्यकता है, तो मैं यह कहना चाहूंगा कि कई मामलों और कई महत्वपूर्ण चीजों में विफल होने के बावजूद, स्थायी बंदोबस्त का कम से कम एक बड़ा फायदा है, और वह यह है कि अमीर जमींदारों का एक विशाल संगठन बनाया गया जो ईमानदारी से चाहते हैं कि ब्रिटिश शासन जारी रहे और लोगों पर उसका दबाव बना रहे।" यह एक ऐसा कथन है जो लॉर्ड विलियम बेंटिक ने अपने लेखन में कहा है। इसके विपरीत, स्थायी बंदोबस्त वहां रहने वाले लोगों के उत्पीड़न और शोषण का एक साधन बन गया। इस प्रणाली के सुदृढ़ीकरण के माध्यम से, ऊपरी स्तर पर सामंतवाद और निचले स्तर पर दास की मानसिकता को बनाए रखा गया।

उपसंहार

रांगेय राघव ने जब लिखना शुरू किया, तो वह समय साहित्य जगत के पुनरुत्थान और विघटन का था। यह पुनरुत्थान देश की आजादी के बाद देश के निर्माण और विकास के दौरान

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पैदा हुई नई परिस्थितियों के कारण हुआ। रूढ़ियों और परंपराओं का टूटना, जो विकास में बाधा बन रही थीं, विघटन का कारण बनीं। इस समय प्रेमचंद के समय में मौजूद स्वतंत्रता और नव निर्माण की उम्मीदें बिखर रही थीं। एक तरह की स्वतंत्रता और समानता उभरने लगी थी। जातिवाद, छुआछूत, सामाजिक अव्यवस्था और असमानता जैसी प्रथाएँ अभी भी मौजूद थीं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए डॉ. रांगेय राघव ने आदर्शों की स्थापना के बारे में अपना विचार बदल दिया और इसके बजाय समाज को वास्तविकता से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण सवालों को उठाने के लिए प्रेरित किया।

सन्दर्भ

1. रांगेय राघव, कब तक पुकारूं, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1999.
2. अविनाश चन्द्र अरोड़ा, भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल प्रदीप पब्लिकेशन्ज, जालंधर, 1993.
3. अशोक शास्त्री (सम्पा०) 'गदल व अन्य कहानियां, किताब घर, दिल्ली, प्र0 सं0 1992.
4. (डॉ०) श्री मती उमा त्रिपाठी, रांगेय राघव का कथा साहित्य विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र० स० 1998,
5. डॉ० उर्मिल गंभीर, प्रतापनारायण श्री वास्तव के उपन्यासों का समाज शास्त्रीस अघ ययन, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, प्र0 **सं01972.**
6. डॉ० कमलाकर गंगगवने, कथाकार रांगेय राघव साहित्य रत्नालय, कानपुर **प्र०** सं० **1982**.
7. **डॉ०** कृष्ण चन्द्र पाण्डेय, प्रेमचन्द्र के जीवन दर्शन के विधायक तत्व, रचना प्रकाशन, इलाहबाद 1970.
8. दीनानाथ वर्मा, आधुनिक भारत ज्ञानदा प्रकाशन दिल्ली, 1990.
9. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना, प्रिय प्रवास में काव्य **संस्कृति** और दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा प्र० सं० 1960.
10. डॉ नगेन्द्र, 'साहित्य का समाज शास्त्र, नेशनल पब्लि० हाऊस, नई दिल्ली, प्र० सं० 1982.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 8, Aug- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

11. डॉ निर्मला जैन साहित्य का समाजशास्त्रीय चिन्तन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1986.

12. डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी. प्र0 सं01965

13. एम० एस० जैन, आधुनिक भारत का इतिहास ज्ञानदा प्रकाशन, दिल्ली 1990

14. मिथिलेश्वर "यह अन्त नहीं, किताब घर दिल्ली, प्र0 सं0 2000.

15. मैत्रेयी प्रष्पा, अल्मा कबूतरी राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०

16. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय' राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्र० सं० **1956**

17. रामबिहारी सिंह तोमर, समाज शास्त्र के मूलतत्व, श्री राम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा, 1982.

18. रामलखन शुक्ल (समपा०) आधुनिक भारत का इतिहास, हि० मा० का० निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1998.

19. डॉ० विजेन्द्र पाल सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, निर्मल पब्लि० दिल्ली, प्र० सं० 1998.

20. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत, अनुवादक श्याम बिहारी राय, रा० शै० अ० औ० प्र० प०. दिल्ली, 1990.